Shodh Sangam Patrika
E-ISSN: 3049-0707, P-ISSN: 3049-172X, Volume 2 | Issue 2 | (Apr – Jun 2025)

प्रकृति बोध का काव्य हाइकु

प्रदीप कुमार दाश 'दीपक' [1], डॉ. सुरुचि मिश्रा [2]

[1] व्याख्याता (हिन्दी) एवं शोधार्थी - अटल बिहारी वाजपेयी विश्वविद्यालय बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

[2] शोध निर्देशक, प्राध्यापक – डी.पी. विप्र महाविद्यालय बिलासपुर (छत्तीसगढ़)

सारांश

हाइकु कविता का मूल जापान में है, पर इसकी आत्मा भारतीय बौद्ध दर्शन और ध्यान परंपरा से गहराई से जुड़ी है। हाइकु में भावों की सहजता, क्षणिकता और ध्यान की सूक्ष्म दृष्टि का विशेष महत्व है। ध्यान के माध्यम से श्वास, विचार और प्रकृति के क्षणिक अनुभवों को हाइकु के तीन पंक्तियों वाले ढाँचे में अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया जाता है। भारत में हाइकु काव्य का प्रवेश बीसवीं सदी में रवींद्रनाथ टैगोर की जापान यात्रा और 'जापान जात्री' के माध्यम से हुआ। बाद में सत्यभूषण वर्मा, अज्ञेय, आदित्य प्रताप सिंह, रमाकांत श्रीवास्तव, मिथिलेश दीक्षित, सुधा गुप्ता, प्रदीप कुमार दाश 'दीपक', उर्मिला कौल, लक्ष्मण प्रसाद नायक आदि रचनाकारों ने इसे समृद्ध किया। हाइकु केवल प्रकृति चित्रण तक सीमित नहीं रहा, बल्कि उसमें सामाजिक, दार्शनिक और आत्मिक विषयों का भी समावेश हुआ। लेख में पंचमहाभूतों आकाश, वायु, जल, अग्नि और पृथ्वी पर आधारित उत्कृष्ट हिंदी हाइकुओं का विवेचन किया गया है। हाइकुकारों ने इन तत्वों पर कल्पनाशीलता और संवेदना से भरपूर रचनाएँ प्रस्तुत की हैं। जैसे, आकाश की विराटता, वायु की चंचलता, जल की तरलता, अग्नि की ऊर्जा और पृथ्वी की सहनशीलता को प्रतीकों और बिंबों के माध्यम से उजागर किया गया है।

वर्तमान में हाइकु कविता पर अनेक शोधकार्य, कोश लेखन और इतिहास लेखन हो रहे हैं, जो इस विधा को साहित्य की मुख्यधारा में स्थापित कर रहे हैं। यह संतोष का विषय है कि हिंदी हाइकु अब एक सशक्त साहित्यिक आंदोलन का रूप ले चुका है, जिसमें देशभर के अनेक प्रतिभाशाली रचनाकार सक्रिय हैं।

मूल शब्द: हाइकु कविता, जैन दर्शन, पंचमहाभूत, प्रकृति चित्रण, हिंदी हाइकु आंदोलन, भारतीय संवेदना

मूल आलेख:

भारत और जापान दोनों देशों के साहित्य में 'ध्यान' का विशेष महत्व है। भारतीय दर्शन में ध्यान को संसार से मुक्ति (मोक्ष/निर्वाण) की ओर ले जाने वाला एक चिंतन माना गया है। यह चेतन मन की एक प्रक्रिया है, जिसके माध्यम से व्यक्ति अपनी चेतना को बाह्य जगत के किसी चुने हुए स्थल विशेष पर केंद्रित करता है। ध्यान से जीवन में दिव्यता आती है, और जब व्यक्ति इस दिव्यता का अनुभव करता है, तो सम्पूर्ण सृष्टि उसे सुंदर प्रतीत होने लगती है। ध्यान व्यक्ति को जीवन की समस्त बुराइयों से ऊपर उठने में सहायता करता है और वह इस संसार को सुंदर बनाने के कार्य में संलग्न हो जाता है।

जापान में जैन, बौद्ध धर्म का प्रमुख अभ्यास 'बैठकर ध्यान करना' है। सतही दृष्टि से यह अभ्यास सरल प्रतीत हो सकता है, किंतु जिसने भी ध्यान किया है, वह जानता है कि केवल पाँच मिनट तक स्थिर रहना भी कितना कठिन हो सकता है। जैन ध्यान में मुद्रा पर ध्यान केंद्रित किया जाता है और साँसों के प्रवाह का अनुसरण किया जाता है एक साँस लेना, एक साँस छोड़ना। जब कोई विचार उठता है, तो उसका अनुसरण नहीं किया जाता, बल्कि ध्यान पुनः साँस पर केंद्रित कर दिया जाता है। इस प्रकार देखा जाए, तो साँसों और विचारों के बीच एक गहरा संबंध स्थापित होता है।

कविता कवि के आंतरिक भावों और विचारों की उद्वेलित अभिव्यक्ति होती है। इस दृष्टि से काव्य में 'श्वास' अर्थात् भाव और विचार का महत्व स्वाभाविक रूप से स्वीकार्य है।

जापानी साहित्य अत्यंत प्राचीन है। इसकी आरंभिक रचनाएँ चीन और चीनी साहित्य के सांस्कृतिक प्रभाव से प्रभावित रही हैं। भारतीय साहित्य ने भी बौद्ध धर्म के माध्यम से जापानी साहित्य पर गहरा प्रभाव डाला। समय के साथ जापानी साहित्य ने अपनी स्वतंत्र शैलियाँ विकसित कीं, जो पूरे विश्व को प्रभावित करने में सफल हुईं।

बीसवीं सदी के पाँचवें दशक से लेकर इक्कीसवीं सदी के वर्तमान काल तक, जापानी काव्य शैलियों विशेषतः हाइकु में भारतीय संवेदना की परंपरा स्पष्ट दिखाई देती है। यद्यपि भारतीय रचनाकार मध्ययुगीन जापानी हाइकु कवियों की भाँति पूर्णतः अपरिग्रही या बौद्ध धर्म में दीक्षित नहीं हैं, फिर भी उनकी संवेदना लौकिक और पारलौकिक दोनों ध्रुवों का स्पर्श करती है।

'हाइकु' एक जापानी काव्य रूप है, जो जैन दर्शन से जुड़ा है, और जैन के मूल में भारतीय बौद्ध दर्शन है। चीन और जापान की संस्कृति एवं साहित्य पर बौद्ध धर्म का प्रत्यक्ष प्रभाव रहा है, इसीलिए यह कहा जा सकता है कि हाइकु की आत्मा मूलतः भारतीय है। बौद्ध या जैन दर्शन दोनों में प्रकृति का अनुकरण प्रमुख है। इनके मूल में प्रकृति की दार्शनिक अवधारणा निहित है, और इसी कारण हाइकु में प्रकृति एवं दर्शन का समन्वय मिलता है। यदि कहा जाए कि 'प्रकृति से निकट संपर्क बनाए रखने' की शर्त पर आधारित यह चित्र काव्य है, तो यह कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। कुछ विद्वान इसे 'प्रकृति काव्य' भी मानते हैं, परंतु हिंदी हाइकु अब केवल प्रकृति चित्रण तक सीमित नहीं रह गया है; उसमें विषयवस्तु का विस्तार हुआ है।

पिछले पाँच दशकों की जापानी काव्य परंपरा में संवेदना अपने व्यापकतम फलक पर विद्यमान रही है। हाइकु, जापानी काव्य रूप होने के बावजूद, अपने मूल में भारतीय दर्शन, प्रकृति और अध्यात्म का समन्वय लिए हुए है। इसके गुणों को लेकर विद्वानों के मत भिन्न भिन्न हैं। कुछ इसे केवल प्रकृति काव्य मानते हैं, परंतु आज हिंदी हाइकु में परिस्थितियों के अनुरूप विविध विषय समाहित होते जा रहे हैं।

'हाइकु' केवल शौकिया लेखन का विषय नहीं है, बल्कि जीवन और जगत के दर्शन से गहराई से जुड़ा हुआ है। जीवन एक लंबी यात्रा है और हम सब इस यात्रा में पथिक हैं। पंचतत्त्वों से निर्मित इस संसार से कवि का सहजात प्रेम स्वाभाविक है। प्रकृति से रचनाकार का जुड़ाव, उसकी विविध घटनाओं से प्रभावित होना और उन अनुभूतियों को हाइकु के रूप में अभिव्यक्त करना स्वाभाविक प्रक्रिया है। संतों का जीवन एक प्रकार के

बंजारेपन में बीतता है जीवन भर जीवन सत्य की तलाश में भटकना। इसी भटकाव में ही जीवन का दर्शन छिपा होता है, और जब वे किसी क्षण में कोई विशेष अनुभूति पाते हैं, तब वह हाइकु बन जाती है।

जापान के संत हाइकु कवियों ने भी अपने जीवन को भटकाव का प्रतीक माना है। उनका मानना था कि यह भटकाव व्यर्थ नहीं, बल्कि गहरे अर्थों से युक्त होता है। इसलिए उनके हाइकु में संपूर्ण जीवन दर्शन की झलक मिलती है। वर्तमान में हम भी वैसी ही अनुभूतियों से गुजरते हैं, जैसी उस समय के जापानी कवि अनुभव करते थे। यही स्थिति हाइकुकारों को छोटी छोटी नैसर्गिक घटनाओं के समीप खींच लेती है और उनके जीवन दर्शन को कविता में व्यक्त करती है।

हाइकु का एक प्रमुख गुण यह है कि इसे एक साँस में पढ़ा जा सके और वह एक ऐसा संपूर्ण चित्र प्रस्तुत करे, जिसमें अनेक भाव गुंथे हों। इसकी चित्रात्मकता, ध्वन्यात्मकता, एकाग्रता, तन्मयता और ऋतु संकेत जैसे तत्व हाइकु को विशिष्ट बना देते हैं।

जैन की ऐतिहासिक उत्पत्ति प्रारंभिक भारतीय बौद्ध धर्म से हुई है। जापान में 'जैन', जिसका अर्थ है 'ध्यान', चीनी शब्द 'चान' से लिया गया है, जो स्वयं संस्कृत शब्द 'ध्यान' का लिप्यंतरण है। जैन में 'साँसों की गिनती के अवलोकन' का विशेष महत्व है। जब कोई साधक जैन ध्यान में संलग्न होता है, तो वह तीन चरणों शरीर, श्वास और मन को समायोजित करने पर केंद्रित होता है।

'हाइकु' शब्द भी जापानी भाषा से आया है 'हाइ' का अर्थ है 'श्वास' और 'कु' का अर्थ है 'कविता'; अतः हाइकु का शाब्दिक अर्थ है 'श्वास भर की कविता'। पारंपरिक जापानी हाइकु में प्रकृति या मौसमी परिवर्तन का एक विशेष संकेत होता है, जिसे 'किगो' कहा जाता है, और कविता के बीच में एक 'काटने वाला शब्द' 'किरेजी' का प्रयोग किया जाता है।

हमारे जीवन में साँसें निरंतर चलती रहती हैं इनकी सरल लय को अनदेखा नहीं किया जा सकता। शरीर और 'मैं' की अनुभूति इन साँसों से ही जुड़ी है। हमारी प्रत्येक साँस, हमारे मन के भावों और विचारों से गुँथी होती है और इन्हीं भावों व विचारों से जन्म लेती है कविता हाइकु।

'हाइकु' में भावों की सहजता एवं ध्यान का विशेष महत्व है। ध्यान हेतु साँस एक सुंदर साधन है, क्योंकि यह निरंतर चलती रहती है। यदि हम बिना विचलित हुए किसी एक ही वस्तु पर लगातार ध्यान केंद्रित करें चाहे वह कुछ भी हो तो यह हमें मुक्ति के द्वार तक पहुँचा सकता है।

जापानी हाइकु विद्वान कवि कैनेथ यसुदा ने हाइकु को 'एक श्वासी काव्य' कहा है। इसका कारण यह है कि एक साँस में प्रायः 16 या 17 अक्षर ही उच्चरित हो सकते हैं, इसलिए हाइकु की आकारगत सीमा भी यही मानी जाती है। सृजन के समय हाइकु कवि का भीतर और बाहर का अनुभव एक श्वास से अधिक लंबा नहीं होता। हाइकु में जहाँ, कब और क्या ये तीनों तत्व देश, काल और वस्तु के त्रिआयामी स्वरूपों की पहचान कराते हैं।

हम सभी को साथ लेकर चलना चाहिए, किंतु हिंदी हाइकु आंदोलन से जुड़े कुछ रचनाकारों ने कुनबावाद का एक दौर खड़ा कर दिया है। वे केवल अपने अपने समूह के रचनाकारों के हाइकुओं की चर्चा कर इतिश्री कर लेते हैं। यह प्रवृत्ति अत्यंत कष्टप्रद है। हिंदी हाइकु साहित्य को उस युग की आवश्यकता है, जब लोग हाइकु को उसके सार के साथ समझें, और इस कुनबावादी सोच से ऊपर उठकर कोने कोने से लिख रहे गुमनाम हाइकुकारों के श्रेष्ठ हाइकुओं को भी मान्यता दें।

सत्रहवीं शताब्दी में बाशो का पदार्पण हाइकु के इतिहास में एक अत्यंत महत्वपूर्ण घटना है। बाशो स्वयं जैन साधक और मौलिक कवि थे। उनका प्रसिद्ध हाइकु -

"फुरुइके या / काबाज़ु तोबिकामु / मिजु नो ओतो"

(पुराने तालाब में मेंढक कूदा, पानी की आवाज़) दुनिया की अनेक भाषाओं में अनूदित हुआ है।

रवींद्रनाथ टैगोर ने 1916, 1917, 1924 और 1929 में जापान की यात्रा की थी। उनकी पुस्तक 'जापान जात्री' (प्रकाशित 1931) के माध्यम से भारत में बीसवीं सदी के चौथे दशक से हाइकु की चर्चा आरंभ हुई।

प्रो. आदित्य प्रताप सिंह को हिंदी हाइकु का शलाका पुरुष कहा जाता है। उनके प्रयासों से हाइकु एक आंदोलन का रूप ले सका। उनकी रचना-

"हँसा बंदर / हुआ आदमी रोया / विभु विकसा"

तीन क्रियाओं के माध्यम से मनुष्य के चारित्रिक विकास को क्रमशः बंदर, आदमी और विभु के प्रतीकों से रूपायित करती है।

हाइकु के अत्यंत समीप अज्ञेय की यह कविता है-

"उड़ गई चिड़िया / काँपी, फिर / थिर हो गई पत्ती।"

यह एक सामान्य घटना है चिड़िया का उड़ना, पत्ती का काँपना, फिर स्थिर हो जाना। परंतु यह सामान्य होकर भी विशिष्ट बन जाती है। यहाँ प्रत्यक्षानुभूति है। अज्ञेय ने अपनी अनुभूति से हाइकु की रचना प्रक्रिया को साकार किया है।

बाशो ने कहा था, "हाइकु दैनिक जीवन में अनुभूत सत्य की अभिव्यक्ति है, पर वह सत्य एक विराट् सत्य की ओर संकेत करने वाली सांकेतिक अभिव्यक्ति है।" इन कविताओं में जैन चिंतन का स्पष्ट प्रभाव परिलक्षित होता है।

प्रो. सत्यभूषण वर्मा ने भले ही मौलिक हाइकु न रचे हों, लेकिन 1978 से 'हाइकु' पत्रिका के संपादन के माध्यम से उन्होंने हाइकु को हिंदी साहित्य की मुख्यधारा में लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

डॉ. भगवत शरण अग्रवाल एक प्रतिष्ठित हाइकु कवि हैं। उनका प्रसिद्ध हाइकु-

"बूँद में समा / सागर और सूर्य / हवा ले उड़ी।"

इसमें आत्मा और परमात्मा, अंश और पूर्ण, कर्म और यात्रा सभी तत्वों का अद्भुत समन्वय है। यह हाइकु आध्यात्मिक दृष्टि से अत्यंत समृद्ध है:-

"हाइकु केवल सपाटबयानी नहीं...

बूँद, आत्मा का प्रतीक

सागर, परमात्मा का प्रतीक

सूर्य, सद्कर्म व त्याग का प्रतीक

हवा, यात्रा का माध्यम।"

17 अक्षरों की यह तीन पंक्तियों की कविता जीवन की पूरी आध्यात्मिक यात्रा को समेटने की क्षमता रखती है।

डॉ. रमाकांत श्रीवास्तव सांस्कृतिक चेतना से संपन्न रचनाकार थे। उन्होंने हाइकु साहित्य को मौलिक सृजन के माध्यम से समृद्ध किया। उनका एक हाइकु

"सृजन मेरा / चुक नहीं सकता / कल्पतरु है।"

शैल रस्तोगी, जो डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी की शिष्या थीं, की हाइकु रचनाएँ हृदय को झकझोर देती हैं "कहाँ सहेजूँ / इतनी सारी धूप / छोटा सा घर।"

उर्मिला कौल हाइकु जगत का एक प्रसिद्ध नाम हैं। उनका एक हाइकु है

"फुटबॉल को / किसने किक मारी / अः चाँद टँगा।"

और दूसरा, आत्म संलग्नता का परिचायक-

"हाइकु संग / रहते रहते मैं / बनी हाइकु।"

डॉ. सुधा गुप्ता के हाइकुओं का मूल प्राण प्रकृति है। उनका एक प्रसिद्ध हाइकु

"चिड़िया रानी / चार कनी बाजरा / दो घूँट पानी।"

प्रो. लक्ष्मण प्रसाद नायक, जिन्होंने 'गुंजन' पत्रिका के माध्यम से हाइकुकारों को जोड़ा और 'हाइकु 575' जैसी ऐतिहासिक कृति लिखी, का एक प्रसिद्ध हाइकु -

"बरसा पानी / मटमैला हो चला / जगत सारा।"

डॉ. मिथिलेश दीक्षित ने हाइकु में सबसे अधिक प्रयोग किए हैं। उनके हाइकु प्रकृति के कोमल और कठोर दोनों रूपों का सफल चित्रण करते हैं

"एक चिड़िया / एक दाना ले उड़ी / घर के लिए।"

"ठहर गई / बरगद की छाँव / मन के गाँव।"

यह संसार पंचमहाभूतों पर आधारित है; प्रकृति भी इन्हीं पर टिकी हुई है। हिंदी हाइकुकारों ने पंचमहाभूतों के विविध स्वरूपों पर उत्कृष्ट हाइकुओं की रचना की है। आइए, इस पर एक दृष्टि डालते हैं -

1. आकाश (आकाश तत्व पर हाइकु)

हिंदी हाइकुकारों ने आकाश विषयक हाइकुओं की रचना में कल्पनाशीलता और मौलिकता का अद्भुत परिचय दिया है। बहुरंगी कल्पना से बुनी गई ये रचनाएँ पाठकों को अत्यंत प्रभावित करती हैं।

वरिष्ठ हाइकुकार श्री नलिनीकांत (संपादक, कविता श्री) ने आकाश के दिव्य और विराट स्वरूप की अछूती कल्पना प्रस्तुत की है:

1. आसमान में / इतनी कविताएँ / छापीं किसने।
2. मानसून का / व्योम महाकाव्य है / मेघदूत का।
3. कौन पढ़ेगा / लिपि महाकाश के / विश्व काव्य की।

अन्य हाइकुकारों के सृजन भी उतने ही प्रभावशाली हैं:-

- देता प्रकाश / ममता प्रेमपाश / सारा आकाश।
- डूबती नाव / अंबर सागर में / दूज का चाँद। (उर्मिला कौल)
- नील गगन / चदरिया बिछाओ / सितारों वाली। (देवेन्द्र नारायण दास)
- भर दो चाहे / तुम पूरा आकाश / बुझे न प्यास। (गोपालदास नीरज)
- दूर से फैला / रूढ़ियों का आकाश / कहाँ से तोड़ूँ? (प्रदीप कुमार दाश 'दीपक')
- नभ में लिखीं / वृक्षों ने कविताएँ / पढ़ते मेघ। (डॉ. भगवत शरण अग्रवाल)
- घन नभ में / आनंदित बिजली / मोर वन में। (डॉ. रामनारायण पटेल)
- बंदिनी मैना / न्यौत रहा आकाश / विवश डैना। (रमाकांत श्रीवास्तव)

2. वायु (वायु तत्व पर हाइकु)-

वायु प्राणीमात्र के जीवन का मूल तत्व है। हाइकुकारों ने वायु पर अनेक वैविध्यपूर्ण हाइकुओं की रचना की है:

- घाटी में घूम / निर्गुण गा रही है / बावली हवा। (अजय चरणम्)

- हवा से जग / भगा भगा शशक / शशांक हुआ। (प्रो. आदित्य प्रताप सिंह)
- पीली दुबली / टेरती फिरे किसे / शहरी हवा। (बलदेव वंशी)
- हुए रूबरू / हवाएँ भी लाती हैं / माँ की खुशबू। (डॉ. मिथिलेश दीक्षित)
- सत्ता का पत्ता / रूह हिलाती हवा / अंधेरी गली। (लक्ष्मण प्रसाद नायक)

3. जल (जल तत्व पर हाइकु)-

जल 'रस' का संवाहक और जीवन का आधार है। इसके विविध रूपों को हिंदी हाइकुकारों ने सशक्त रूप में चित्रित किया है:

- नदी का पानी / सागर में समाया / सागर बना। (अनिता कपूर)
- कीचड़ पानी / मुस्काते कमल की / यही कहानी। (कमलेश भट्ट कमल)
- सिंधु का नीर / किस दिन जानेगा / नदी की पीर। (कुँअर बेचैन)
- न माने हार / आगे ही बढ़ जाती / जल की धार। (डॉ. मिथिलेश दीक्षित)
- गुनगुनाता / रदीफ़ काफ़िये में / नदी का जल। (रामनिवास पंथी)
- बरसा पानी / मटमैला हो चला / संसार सारा। (लक्ष्मण प्रसाद नायक)
- रसीली वर्षा / नीम का युवा पेड़ / नाचता रहा। (डॉ. सुधा गुप्ता)

4. अग्नि (अग्नि तत्व पर हाइकु)-

अग्नि जीवन का ऊर्जा स्रोत है। हाइकुकारों ने अग्नि को लौकिक और आध्यात्मिक रूपों में चित्रित किया है:

- कौन बेदाग / सूरज में है आग / चाँद में दाग। (प्रदीप कुमार दाश 'दीपक')
- श्रमिक घर / आग चूल्हे में नहीं / पेट में जले। (महावीर सिंह)
- पावक की लौ / ऊपर को उठती / कुछ कहती। (डॉ. मिथिलेश दीक्षित)
- आग ही आग / जले पूरा जंगल / बुझाए कौन? (शैल रस्तोगी)
- एक चिंगारी / परास्त करती है / तम का दंभ। (श्याम खरे)
- आग का गोला / डुबकी मार गया / हरे समुद्र। (डॉ. सुधा गुप्ता)

5. पृथ्वी (पृथ्वी तत्व पर हाइकु)-

पृथ्वी सहनशीलता, सृजन और पोषण की जननी है। हाइकुकारों ने भूमि के प्रति अपनी कृतज्ञता और संवेदना अनेक सुंदर रचनाओं के माध्यम से प्रकट की है:

- झड़ी की डोर / भू का घट न उठा / कुपित कर्का। (प्रो. आदित्य प्रताप सिंह)
- यह धरती / फल फूलों से भरी / पूजा की थाली। (नलिनीकांत)
- धानी चूनर / ओढ़ कर धरती / चली पीहर। (प्रदीप कुमार दाश 'दीपक')
- प्राण आतप / धरती से खींचते / सभी पादप। (डॉ. मिथिलेश दीक्षित)
- छलके नेत्र / चू चू पड़े भू पर / धरती तर।

निष्कर्ष:

प्रकृति और पर्यावरण पर आधारित हाइकु हिंदी साहित्य की अमूल्य निधि हैं। इस विधा के विकास में कई हाइकुकारों ने अमूल्य योगदान दिया है। रामनिवास पंथी, रामनिवास मानव, डॉ. रामनारायण पटेल, कमलेश भट्ट कमल, जगदीश व्योम, अविनाश बागड़े, पवन कुमार जैन, रामेश्वर कांबोज, शैलेश, मीनू खरे, सुरंगमा यादव, अजय चरणम्, अनिता कपूर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। यह अत्यंत संतोष की बात है कि आज हाइकु कविता पर शोध कार्य (Ph.D.), कोश लेखन, और इतिहास लेखन जैसे गंभीर प्रयास हो रहे हैं। ये प्रयास निश्चय ही हाइकु आंदोलन को नई दिशा और सशक्त बल प्रदान करेंगे।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. मिथिलेश दीक्षित (संपादक), *हिन्दी हाइकु काव्य के प्रमुख हस्ताक्षर*, आगरा: निखिल पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीब्यूटर्स, 2022।
2. डॉ. सुधा गुप्ता एवं डॉ. उर्मिला अग्रवाल (संपादक), *हिन्दी हाइकु प्रकृति काव्यकोश*, दिल्ली: अयन प्रकाशन, 2014।
3. डॉ. सत्यभूषण वर्मा (अनुवादक), *जापानी कविताएँ*, दिल्ली: सीमान्त पब्लिकेशंस इंडिया, 1977।
4. प्रदीप कुमार दाश 'दीपक' (संपादक), *हाइकु वाटिका*, गाजियाबाद: माण्डवी प्रकाशन, 2004।
5. *हाइकु काव्य विश्वकोश*, अहमदाबाद: हाइकु भारती प्रकाशन, 2009।
6. प्रदीप कुमार दाश 'दीपक' (संपादक), *हाइकु समक*, गाजियाबाद: माण्डवी प्रकाशन, 2006।
7. प्रदीप कुमार (संपादक), *हाइकु मञ्जूषा*, मेरठ: उत्कर्ष प्रकाशन, 2018।
8. *प्रकृति की गोद में* (हाइकु संग्रह), दिल्ली: अयन प्रकाशन, 2017 (प्रथम संस्करण)।